JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी साहित्य में उपन्यासों का स्थान

मोनू त्यागी,
पीजीटी हिंदी,
जी.एस.एस. खोजकीपुर, पानीपत।

सार

हिंदी उपन्यास–साहित्य के लेखन का प्रारम्भ 19वीं शताब्दी के सातवें दशक के उपरांत हुआ। यद्यपि भारत में कथा–साहित्य की परम्परा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध थी तथापि जिस रूप में हिंदी उपन्यास साहित्य का जन्म और विकास हुआ उसका इतिहास उतना पुराना नहीं है। हिंदी लेखकों या उपन्यासकारों को उपन्यास लेखन की प्रेरणा सीधे–सीधे पश्चिमी उपन्यासकारों और उनके उपन्यासों से मिली। इस अर्थ में हिंदी उपन्यास साहित्य को 'आधुनिक युग की देन' कहना ज्यादा उपयुक्त है। उपन्यास साहित्य के अस्तित्व में आ जाने के बाद उस पर संस्कृत साहित्य की आख्यायिका आदि का प्रभाव पड़ा हो पर यह वास्तविकता है कि उसके जन्म में इसका किंचित भी योगदान नहीं है। हिंदी में प्रथम कहानी की तरह हिंदी के प्रथम उपन्यास और उपन्यासकार का प्रश्न अत्यंत विवादास्पद दिखता है। हिंदी साहित्य में उपन्यास–लेखन का प्रारम्भ मौलिक सृजन की अपेक्षा विभिन्न भाषाओं में रचित उपन्यासों के अनुवादों के माध्यम से हुआ जान पड़ता है। उपरोक्त के आधार पर ही अन्वे"ाक ने हिन्दी साहित्य में उपन्यासों का स्थान ज्ञात करने का प्रयास किया है।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य

हिन्दी साहित्य हिन्दी भाषा का रचना संसार है। हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़ें प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा में तलाशी जा सकती हैं। परंतु हिन्दी साहित्य की जड़ें मध्ययुगीन भारत की ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली और मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य में पाई जाती हैं। हिंदी में गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ और इसने अपनी शुरुआत कविता के माध्यम से जो कि ज्यादातर लोकभाषा के साथ प्रयोग कर विकसित की गई। हिंदी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है। गद्य, पद्य और चम्पू। हिंदी की पहली रचना कौन सी है इस विषय में विवाद है लेकिन ज़्यादातर साहित्यकार देवकीनन्दन खत्री द्वारा लिखे गये उपन्यास चंद्रकांता को हिन्दी की पहली प्रामाणिक गद्य रचना मानते हैं। साहित्य अविरल धारा की तरह होता है, जो निरंतर आगे बढ़ता है। उसमें न कोई रुकावट आती हैं और न ही कोई उसे कोई बाधित करता है। समय के साथ–साथ उसमें परिवर्तन आते रहते है और परिवर्तन के अनुरूप साहित्य को नयी प्रवृत्तियाँ, नयी दिशाएँ मिलती है। हिंदी साहित्य का आरम्भ आठवीं शताब्दी से माना जाता है। यह वह समय है जब सम्राट हर्ष की मृत्यु के बाद देश में अनेक छोटे–छोटे शासन केन्द्र स्थापित हो गए थे जो परस्पर संघर्षरत् रहा करते थे। मुसलमानों से भी इनकी

टक्कर होती रहती थी। हिन्दी साहित्य के अब तक लिखे गए इतिहासों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखे गए 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' को सबसे प्रामाणिक तथा व्यवस्थित इतिहास माना जाता है। आचार्य शुक्ल जी ने इसे "हिन्दी शब्द सागर की भूमिका" के रूप में लिखा था जिसे बाद में स्वतंत्र पुस्तक के रूप में 1929 ई० में प्रकाशित आंतरित कराया गया। हिन्दी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है– गद्य, पद्य और चम्पू। जो गद्य और पद्य दोनों में हो उसे चम्पू कहते है। खड़ी बोली की पहली रचना कौन–सी है, इस विषय में विवाद है लेकिन अधिकांश साहित्यकार लाला श्रीनिवास दास द्वारा लिखे गये उपन्यास परीक्षा गुरु को हिन्दी की पहली प्रामाणिक गद्य रचना मानते हैं।

उपन्यास

उपन्यास शब्द का शाब्दिक अर्थ है सामने रखना। उपन्यास मे प्रसादन अर्थात् पाठक को प्रसन्न रखने का मुख्य भाव छिपा होता है, अतएव पाठक जिज्ञासावश अनवरत् उससे जुड़ा रहना चाहता है। **''उपन्यास की व्याख्या में कहा जा सकता है कि उपन्यास लेखक घटनाओं का संयोजन इस तरह करता है कि उसे पढ़कर पाठक को प्रसन्नता हो, इस प्रकार की प्रसन्नता को उपन्यस्त करना ही उपन्यास है।''** हिन्दी का पहला उपन्यास श्री निवास दास द्वारा लिखित परीक्षा गुरू माना जाता है। उपन्यास को पहले पहल सामाजिक जीवन से जोडने का कार्य उपन्यास सम्राट प्रमेचन्द्र ने किया था। वे उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मानते थे। **''मानव चरित्र पर प्रकाश डालना तथा उसके रहस्य को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।''** उपन्यास की विधा नई है पर उपन्यास शब्द बहुत पुराना है।

साहित्य दर्पण मे उपन्यास भणिका का एक भेद माना गया जो दृश्य काव्य के अन्तर्गत है। प0 अम्बिका दत्त व्यास ने गद्य काव्य मीमांसा और डा0 श्यामसुन्दर दास ने साहित्यालोचन में उसे गद्य काव्य की कोटि में रखा। उपन्यास गद्य काव्य से भिन्न एक स्वतंत्र प्रकार की रचना है। अमर कोष में दिया गया अर्थ उस पर लागू नहीं होता है। प्राचीन काल मे उपन्यास अविर्भाव के समय इसे आख्यायिका नाम मिला था। **''कभी इसे अभिनव की अलौकिक कल्पना, तो कभी प्रबन्ध कल्पना, कभी आश्चर्य वृत्तान्त कथा तो कभी प्रबन्ध कल्पित कथा, कभी एक सांस्कृतिक वार्ता, तो कभी नोबेल, कभी नवन्यास, तो कभी गद्य काव्य नाम से प्रसिद्धि मिली। उपलब्ध रचनाओ में ''मालती'' 1875 के लिए इस विद्या को उपन्यास नाम मिला।''**

उपन्यास का अर्थ

उपन्यास शब्द में **''अस''** धातु है। **''नि''** उपसर्ग से मिलकर न्यास शब्द बनता है। न्यास शब्द का अर्थ है धरोहर। उपन्यास शब्द दो शब्दों ''**उप+न्यास**'' से मिलकर बना है। **''उप''** अधिक समीप वाची उपसर्ग है, संस्कृत के व्याकरण सिद्ध शब्दों, न्यास व उपन्यास का पारिभाषिक अर्थ कुछ और ही होता है। एक विशेष प्रकार की टीका पद्धति को न्यास कहते हैं। हिन्दी मे उपन्यास शब्द कथा साहित्य के रूप में प्रयागे होता है। वहीं बगंला भाषा मे उसे उपन्यास, गजुराती में नवल कथा, मराठी में कादम्बरी तथा उर्दू में नावले शब्द के रूप में प्रयोग करते हैं। वे सभी ग्रंथ उपन्यास हैं जो कथा सिद्धान्त के कम ज्यादा नियमो का पालन करते हुए मानव की सतत्, संगिनी, कुतूहल, वृत्ति को पात्रो तथा घटनाओ को काल्पनिक तथा ऐतिहासिक संयोजन द्वारा शान्त करजम हैं।

उपन्यास का प्रारम्भ उसी समय से हो गया था, जब एक व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति के साथ अपनत्व की भावना से विचार–विनिमय किया था। उपन्यास की वृत्ति का प्रारम्भ मानव चेतना की उत्सुकता से होता है। आज की पारिभाषिक शब्दावली के अनुसार

उपन्यास, गद्य की शैली का एक प्रकार है। पर वास्तव में यह उपन्यास गद्य या छन्द बन्धन से मुक्त एक कथन वृत्ति का नामकरण मात्र है। जिसका प्रथम प्रमाण हमे अंग्रेजी के उदय काल के अग्रदूत कवि चासर की कृति ''कैण्टर वरी टेल्स'' में मिलता है। हिन्दी में इसका स्पष्ट रूप से ज्वलंत प्रमाण सूर व तुलसी के तुलनात्मक अध्ययन मे भी उपलब्ध होता है। यदि हम सूर साहित्य को मन का प्रतीक मानें तो तुलसी का रामचरित मानस उपन्यास वृत्ति का सर्वोपरि उदाहरण सिद्ध होगा। उपन्यास वृत्ति मे जीवन जन्म से पूर्व भी तथा मृत्यु के बाद भी गतिशील रहता है। उपन्यास शब्द का शाब्दिक अर्थ है सामने रखना। अर्थात् उप का अर्थ है समीप और न्यास शब्द का अर्थ है, उपस्थित करना। इस पक्रार उपन्यास का अर्थ है परिस्थितियो को स्पष्ट रूप से सामने रखने वाला।

उपन्यास की परिभाषा

डा0 श्यामसुन्दर दास ने उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार से दी है–उपन्यास मनुष्य जीवन की काल्पनिक कथा है। उपन्यासकार सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र जी लिखते हैं कि **''मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना तथा उसके चरित्रों को स्पष्ट करना ही उपन्यास का मूल तत्व है।''**

सुधी समीक्षक आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी के शब्दो में **''उपन्यास से आजकल गद्यात्मक कृति का अर्थ लिया जाता है, पद्यबद्ध कृतियाँ उपन्यास नहीं हुआ करते हैं।''**

डा0 भगीरथ मिश्र के शब्दों में : **''युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली मे स्वाभाविक जीवन की पूर्ण झाँकी को प्रस्तुत करने वाला गद्य ही उपन्यास कहलाता है।''**

निष्कर्षतः बाबू गुलाबराय के शब्दो में : **''उपन्यास कार्य कारण श्रृंखला मे बंधा हुआ वह गद्य कथानक है जिसमें वास्तविक व काल्पनिक घटनाओ द्वारा जीवन के सत्यों का उद्घाटन किया है।''**

उपन्यास की विशेषताएं

उपन्यास की उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषणणोपरान्त उपन्यास की निम्नलिखित विशेषताएं हैं––

i. यह अपेक्षाकृत विस्तृत रचना होती हैं।
ii. उपन्यास जीवन के विविध पक्षों का समावेश होता हैं।
iii. उपन्यास में वास्तविकता तथा कल्पना का कलात्मक मिश्रण होता हैं।
iv. कार्य–कारण श्रंखला का निर्वाह किया जाता हैं।
v. उपन्यास में मानव–जीवन के सत्य का उद्घाटन होता हैं।
vi. जीवन की समग्रता का चित्र इस प्रकार उपस्थित किया जाता है कि पाठक उसकी अन्तर्वस्तु तथा पात्रों से अपना तादात्मीकरण कर सके।

उपन्यास की उत्पत्ति और उसका महत्त्व

उपन्यास मनुष्य के सामाजिक, वैयक्तिक अथवा दोनों प्रकार के जीवन का रोचक साहित्यिक प्रतिरूप है जो प्रायः दोनों प्रकार के जीवन को प्रभावित करता है तथा कथासूत्र के आधार पर निर्मित होता है और आगे बढ़ता है। सामाजिक एवं वैयक्तिक

जीवन उपन्यास के मुख्य विषय हैं इसमें किसी एक को अथवा दोनों को उपन्यास का मुख्य आधार बनाया जा सकता है। व्यक्ति और समाज परस्पर अटूट बन्धनों से बँधे रहते हैं अतः साहित्य में भी इसको सम्बद्ध ही रखना पड़ता है। प्रत्येक उपन्यास में व्यक्ति और समाज का अध्ययन न्यूनाधिक मात्रा में आ ही जाता है किन्तु आज इनमें किसी एक को मुख्य विषय बनाकर उपन्यास लिखे जाने लगे हैं। उपन्यास में प्रतिपादित जीवन चाहे सामाजिक हो, चाहे वैयक्तिक, वह सामान्य या वि"ोष, वि"ाल या सीमित हो सकता है। जीवन के विविध अंगों का निरीक्षण कर उसका समग्र रूप उपस्थित करने वाले कतिपय वृहत्काय उपन्यास हमें वि"व साहित्य ने प्रदान किए हैं। दूसरी ओर ऐसे उपन्यास भी हैं जिनमें सामाजिक जीवन की समस्या का और व्यक्ति के किसी वि"ोष मनोव्यापार का वि"लेषण किया गया है। जैसे–लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षागुरू', प्रेमचन्द कृत 'ग़बन', 'सेवासदन', जैनेन्द्र कुमार कृत 'परख', वि"म्भरनाथ शर्मा 'कौ"िाक' कृत 'माँ', 'भिखारिणी' तथा अम्रृतलाल नागर कृत 'मानस का हंस', आदि।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थेः

- हिन्दी साहित्य का अध्ययन का अध्ययन करना।
- हिन्दी उपन्यासों का अध्ययन करना।
- हिन्दी साहित्य में उपन्यासों के महत्व का अध्ययन करना।

भाोध अध्ययन विधि

किसी भी शोधकार्य को पूरा करने हेतु अध्ययन विधि एक अत्यंत आवश्यक साधन है। शोध के स्वरूप के अनुसार ही विधि का चयन किया जाना अपेक्षित है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता

हिंदी उपन्यास की परंपरा अत्यंत गहरी और विभिन्न रंगो से भरपूर है। अर्नेस्ट ए. बेकर ने उपन्यास की परिभाषा देते हुए उसे गद्यबद्ध कथानक के माध्यम द्वारा जीवन तथा समाज की व्याख्या का सर्वोत्तम साधन बताया है। यों तो विश्वसाहित्य का प्रारंभ ही संभवतः कहानियों से हुआ और वे महाकाव्यों के युग से आज तक के साहित्य का मेरुदंड रही हैं, फिर भी उपन्यास को आधुनिक युग की देन कहना अधिक समीचीन होगा। साहित्य में गद्य का प्रयोग जीवन के यथार्थ चित्रण का द्योतक है। साधारण बोलचाल की भाषा द्वारा लेखक के लिए अपने पात्रों, उनकी समस्याओं तथा उनके जीवन की व्यापक पृष्ठभूमि से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करना आसान हो गया है। जहाँ महाकाव्यों में कृत्रिमता तथा आदर्शोन्मुख प्रवृत्ति की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है, आधुनिक उपन्यासकार जीवन की विश्रृंखलताओं का नग्न चित्रण प्रस्तुत करने में ही अपनी कला की सार्थकता देखता है।

यथार्थ के प्रति आग्रह का एक अन्य परिणाम यह हुआ कि कथा साहित्य के अपौरुषेय तथा अलौकिक तत्व, जो प्राचीन महाकाव्यों के विशिष्ट अंग थे, पूर्णतया लुप्त हो गए। कथाकार की कल्पना अब सीमाबद्ध हो गई। यथार्थ की परिधि के बाहर जाकर मनचाही उड़ान लेना उसके लिए प्रायः असंभव हो गया। उपन्यास का आविर्भाव और विकास वैज्ञानिक प्रगति के साथ

हुआ। एक ओर जहाँ विज्ञान ने व्यक्ति तथा समाज को सामन्य धरातल से देखने तथा चित्रित करने की प्रेरणा दी वहीं दूसरी ओर उसने जीवन की समसयाओं के प्रति एक नए दृष्टिकोण का भी संकेत किया। यह दृष्टिकोण मुख्यतः बौद्धिक था। उपन्यासकार के ऊपर कुछ नए उत्तरदायित्व आ गए थे। अब उसकी साधना कला की समस्याओं तक ही सीमित न रहकर व्यापक सामाजिक जागरूकता की अपेक्षा रखती थी। वस्तुतः आधुनिक उपन्यास सामाजिक चेतना के क्रमिक विकास की कलात्मक अभिव्यक्ति है। जीवन का जितना व्यापक एवं सर्वांगीण चित्र उपन्यास में मिलता है उतना साहित्य के अन्य किसी भी रूप में उपलब्ध नहीं।

सामाजिक जीवन की विशद व्याख्या प्रस्तुत करने के साथ ही साथ आधुनिक उपन्यास वैयक्तिक चरित्र के सूक्ष्म अध्ययन की भी सुविधा प्रदान करता है। वास्तव में उपन्यास की उत्पत्ति की कहानी यूरोपीय पुनरुत्थान (रेनैसाँ) के फलस्वरूप अर्जित व्यक्तिस्वातंत्र्य के साथ लगी हुई है। इतिहास के इस महत्वपूर्ण दौर के उपरांत मानव को, जो अब तक समाज की इकाई के रूप में ही देखा जाता था, वैयक्तिक प्रतष्ठा मिली। सामंतवादी युग के सामाजिक बंधन ढीले पड़े और मानव व्यक्तित्व के विकास के लिए उन्मुक्त वातावरण मिला। यथार्थोन्मुख प्रवृत्तियों ने मानव चरित्र के अध्ययन के लिए भी एक नया दृष्टिकोण दिया। अब तक के साहित्य में मानव चरित्र के सरल वर्गीकरण की परंपरा चली आ रही है। पात्र या तो पूर्णतया भले होते थे या एकदम गए गुजरे। अच्छाइयों और त्रुटियों का सम्मिश्रण, जैसा वास्तविक जीवन में सर्वत्र देखने को मिलता है, उस समय के कथाकारों की कल्पना के परे की बात थी। उपन्यास में पहली बार मानव चरित्र के यथार्थ, विशद एवं गहन अध्ययन की संभावना देखने को मिली।

अंग्रेजी के महान उपन्यासकार हेनरी फ़ील्डिग ने अपनी रचनाओं को गद्य के लिखे गए व्यंग्यात्मक महाकाव्य की संज्ञा दी। उन्होंने उपन्यास की इतिहास से तुलना करते हुए उसे अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण कहा। जहाँ इतिहास कुछ विशिष्ट व्यक्तियों एवं महत्वपूर्ण घटनाओं तक ही सीमित रहता है, उपन्यास प्रदर्शित जीवन के सत्य, शाश्वत और संर्वदेशीय महत्व रखते हैं। साहित्य में आज उपन्यास का वस्तुतः वही स्थान है जो प्राचीन युग में महाकाव्यों का था। व्यापक सामाजिक चित्रण की दृष्टि से दोनों में पर्याप्त साम्य है। लेकिन जहाँ महाकाव्यों में जीवन तथा व्यक्तियों का आदर्शवादी चित्र मिलता है, उपन्यास, जैसा फ़ील्डिग की परिभाषा से स्पष्ट है, समाज की आलोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार के लिए कहानी साधन मात्र है, साध्य नहीं। उसका ध्येय पाठकों का मनोरंजन मात्र भी नहीं। वह सच्चे अर्थ में अपने युग का इतिहासकार है जो सत्य और कल्पना दोनों का सहारा लेकर व्यापक सामाजिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है।

हिन्दी साहित्य में उपन्यास का उद्भव और विकास

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में समय की कठोर आवश्यकताओं ने जहाँ गद्य के विकास में योग दिया, वहीं उपन्यास साहित्य की भी श्रीवृद्धि हुई। अंग्रेजी तथा उससे प्रभावित बंगाली तथा मराठी उपन्यासों ने हिन्दी साहित्यकारों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। भारतेन्दु जी के समय में अनेकों अन्य भाषा के उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद किया गया, मौलिक उपन्यासों की रचनायें भी हुई। मौलिक व सामाजिक उपन्यासों में श्रीनिवासदास के परीक्षा गुरु', राधाकृष्णदास का निसहाय हिन्दु तथा बालकृष्ण भट्ट को "सौ अजान एक सुजान" और "नूतन ब्रह्मचारी समाज में विशेष आदृत हुए। भारतेन्दु जी ने भी एक उपन्यास लिखना आरम्भ किया था, वह दुर्भाग्यवश पूरा न हो सका। बंगला आदि से अनूदित उपन्यासों में 'दुर्गेश नन्दिनी', 'सरोजिनी', 'दीप निर्वाण आदि प्रसिद्ध थे, इसी प्रकार अंग्रेजी या मराठी भाषाओं से भी कई उपन्यासों का अनुवाद हुआ। तिलस्मी ऐय्यारी के उपन्यास लिखे जाने लगे। इस क्षेत्र में बाबू देवकीनन्दन खत्री को विशेष सफलता प्राप्त हुई। इन उपन्यासों ने हिन्दी

उपन्यासों के पाठक और लेखक दोनों ही पैदा किये। प्रेमाख्यानक उपन्यासों में किशोरीलाल गोस्वामी और जासूसी उपन्यासकारों में गोपालराम गहमरी मुख्य थे। इन दोनों के उपन्यास ने बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की। इसके अतिरिक्त उस काल में कुछ ऐतिहासिक उपन्यासों की भी रचना हुई, जिसमें किशोरीलाल गोस्वामी का 'रजिया बेगम तथा मिश्र बन्धुओं का "वीरमणि" उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक तक सभी विषयों के उपन्यास हिन्दी के क्षेत्र में आ चुके थे, परन्तु उनमें उच्चकोटि के साहित्य का प्रायः अभाव था, कृत्रिमता अधिक थी।

निष्कर्श

अब तक हिंदी उपन्यासों की आविर्भावकालीन प्रवृत्तियों और स्वरूप को उद्घाटित और विवेचित करने का प्रयास किया गया है। उसके युगों के विभाजन और विकासात्मक चरणों को अब तक स्पष्ट नहीं किया जा सका था। हिंदी उपन्यास लेखन के क्षेत्र में प्रेमचंद का पदार्पण एक ऐसी आधारभूत रेखा है जिसके आर–पार झांक कर हिंदी उपन्यास के विकास की सही दिशा को सरलतापूर्वक निर्दिष्ट किया जा सकता है। अतः हिंदी उपन्यास लेखन को प्रेमचंदपूरन और उनके बाद के रचे गए उपन्यासों को प्रेमचंदोत्तरकालीन उपन्यासों के रूप में रेखांकित और मूल्यांकित करना ज्यादा उपयुक्त है।

बीसवीं शताब्दी हिंदी उपन्यास लेखन की दृष्टि से चिरस्मरणीय है। इस काल में हिंदी उपन्यासों का विकास आश्चर्यजनक रूप से हुआ। इस नवीन साहित्यिक विधा ने साहित्य की अन्य विधाओं– कविता, नाटक, एकांकी, निबंध, आदि सभी को पीछे छोड़ दिया। कला, विषय और उपादान– इन तीनों दृष्टियों से प्रारम्भिक युग के उपन्यासों की अपेक्षा इस युग का उपन्यास ज्यादा समुन्नत बना। औपन्यासिक कला में कथा तत्त्वों के अलावे नाटकीय तत्त्वों–संवादों आदि का सामवेश हुआ। किंतु हिंदी उपन्यास लेखन में कलात्मक उत्कर्ष का समय तब आया जब उपन्यासकार अंतर्वाह्य के संघर्षों और मनोवैज्ञानिक प्रविधियों को ग्रहण कर उपन्यास रचना की ओर प्रवृत्त हुआ। अब तक के उपन्यासों में अलौकिकता, रहस्य–रोमांच, घटना–बाहुल्य, चमत्कार और अतिरंजेना आदि प्रमुख तत्त्व थे परंतु परवर्ती काल के उपन्यासों में मानव–जीवन और मानव मन का अत्यंत स्वाभाविक और सहज चित्रण होने लगा।

संदर्भ ग्रंथ

- देवी, बाला (2018), हिन्दी उपन्यास और भारतीय समाज का मध्यवर्ग, जर्नल ऑफ़ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, खंडः14, अंकः 2, डीओआईः 10.29070/जेएएसआरएई
- यादव चित्रा (2019), मुंशी प्रेमचन्द्र का हिन्दी साहित्य मे योगदान– एक समीक्षा, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, वॉल्यूमः 16, अंकः 5 डीओआईः 10.29070/जेएएसआरएई
- लाल बहादुर वर्मा (1998), यूरोप का इतिहास, खंड –1, प्रकाशन संस्थान।
- संजय जोशी, फ्रैक्चर्ड मार्डनिटी, ओ यू पी, 2001, पृ. 5
- एनकार्टा 2007
- लाल बहादुर वर्मा, यूरोप का इतिहास, खंड–1, प्रकाशन संस्थान, 1998
- सी डी एम कैटलनी, आधुनिक काल का इतिहास, पृ. 8
- टॉम बॉटमोर (संपा), दि ब्लैकवेल डिक्शनरी ऑफ सोशल थॉट, पृ. 381–382

- लियोनार्ड स्केरिन्टन, दि क्राइसिस ऑफ दि ब्यूरोक्रेसी इल पायलट पेपर्स, वोल्यूम 2, नंबर 2, जून 1947, पृ. 77
- बर्नाड कुहन ओमनीबस, ओ यू पी, 2004, पृ. 320
- सुरेंद्र नाथ बनर्जी, अ नेशन इन द मेकिंग, कलकत्ता 1945
- रविंदर कुमार, आधुनिक भारत का सामाजिक इतिहास, ग्रंथ शिल्पी, 1997, पृ. 11, ऑक्सफोर्ड, 1966
- रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, ना प्र स, 1994, पृ. 246
- गोपाल राय, हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल, 2005, पृ. 22
- डा0 रमेश चन्द्र शर्मा हिन्दी साहित्य का इतिहास, विद्या प्रकाशन गुजैनी, कानपुर चतुर्थ– 2008, 14